International Journal of Applied Research 2017; 3(9): 476-477

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(9): 476-477
www.allresearchjournal.com
Received: 18-07-2017
Accepted: 22-08-2017

अभिमन्यु सिंह
(शोधार्थी), हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
अभिमन्यु सिंह
(शोधार्थी), हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

दारूलशफा उपन्यास में वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था की विसंगतियां

अभिमन्यु सिंह

प्रस्तावना

भारतीय समाज ने स्वतंत्रता समानता तथा एकता, भ्रष्टाचार मुक्त एकनिष्ठ भारत की कल्पना की थी, वह आजादी के पहले दशक में ही नष्ट होने लगा था।

गांधी, नेहरू, सुबासचन्द्र बोस, मौलाना आजाद ने भारत की स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान तथा आजादी के पश्चात् भारत की राजनीति तथा लोकतंत्र की जो कल्पना की थी वह आजादी प्राप्त होने के पश्चात् भारतीय नेताओं ने पूरी तरह से ध्वस्त कर दिए तथा अब राजनीति वंशवाद, भाई भतीजावाद, पूंजीवाद तथा अपराध के शरण स्थल भ्रष्टाचार द्वारा दन उगाही का साधन हो गया आज भारतीय समाज में लोकतंत्र तथा राजनीति में पैसा कमाने तथा अपने पीढ़ी के भविष्य को वंशवाद के माध्यम से सुरक्षित करने तथा अपने आपराधिक कृत्यों को राजनीति द्वारा छुपा सके। आज के राजनीति के व्यवस्था में जो जितना बड़ा भ्रष्टाचारी व्यक्ति होगा वह उतना बड़ा जनता का सेवक होगा।

राजकृष्ण मिश्र द्वारा लिखित दारूलशफा उपन्यास वर्तमान राजनीतिक समस्याओं को लेकर लिखा गया है लेखक के शब्दों में ''ये समस्याएं निजी होकर राष्ट्रीय है, तो प्रादेशिक होकर अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय राजनीति के राजनेता अपनी–अपनी रियासतों की हिफाजत के लिये चिन्तित कुर्सियां और उनके इर्द–गिर्द ऋतुओं की तरह चक्कर काटते चमचे। यही माहौल में सुपरिचित वर्तमान राजनीति के विभिन्न अंधेरे कोनों की विस्मयकारी पड़ताल की गयी है।

दारूलशफा उपन्यास में एक तरफ जहां उत्सुकदास, गुरूपद स्वामी, कामयाम सेठ जो अपने राजनीतिक स्वार्थों तथा सरकारी खजानों का हमेशा दुरुपयोग करते हैं। तो दूसरी तरफ रंगीन राम, लोवीराम, बलदेव चौधरी थे यहां हर तरफ मुख्यमंत्री तथा मन्त्री की कुर्सी के लिए संघर्ष कर रहा है। मन्त्री की कुर्सी प्राप्त होने पर व्यक्ति के हर गुनाह, हर अपराध अपने आप समाप्त हो जाते हैं तथा गुनाहों को छिपाने का सबसे बड़ा साधन मन्त्री बनना है।

''कृष्ण वल्लभ को चिंता गुनाहों पर परदा डालने की थी अफीम की तस्करी, डकैती की कमाई, राष्ट्र निर्माता संघ के घपले, तांबा कांड कामयाम सेठ से मिलने वाले पांच लाख रूपये के लिए उनका मंत्री बनना उतना ही जरूरी था जितना ब्रह्मा का सृष्टि रचना। कृष्ण वल्लभ भी उत्सुक दास के साथ पांच घण्टों में इन विपदाओं से ऊपर उठ जायेंगे। शक्ति का अमोघ अस्त्र उनके पास होगा फिर उन्हें कोई छू भी न सकेगा, यशोदास वल्लभ, कमला सिंह, दुर्लभ, काछी, जामिल खाँ, कामयाब सेठ सभी मन्त्रिमण्डल में छाते के नीचे होंगे। बौछार में उनको भींगना नहीं होगा।'' वर्तमान भारतीय समाज की राजनीति में ऐसा दौर प्रारम्भ हो गया है कि यहाँ भ्रष्टाचार, अपराध गुण्डागर्दी, घपले आदि करने पर भी यदि सांसद विधायक, मन्त्री बन जाते हैं तो वह इस गुनाहों तथा अपराधों से रक्षा करने तथा छिपाने का अमोघ अस्त्र है जिसके माध्यम से हम बड़े से बड़ा अपराध तथा बड़े से बड़ा घोटाला छिपाया जा सकता है।

कृष्ण वल्लभ मन्त्री इसलिए बनना चाहता है कि वह ताबाकांड में जो घपला हुआ अफीम की तस्करी, डकैती आदि से प्राप्त अपराधों से अपनी रक्षा कर सके। आज के राजनीति समाज में भ्रष्टाचार के अलावा परिवारवाद भाई भतीजावाद यही आधुनिक लोकतन्त्र तथा आधुनिकता की सबसे बड़ी पहचान बन गयी है।

सच्चिदानन्द सिन्हा लोकतन्त्र की चुनौतियां पुस्तक में लिखते हैं ''आधुनिक मानदण्डों पर आधारित संसदीय लोकतंत्र और प्रशासन के ऊँचे पदों पर वे ही लोग है जिनके व्यक्तिगत आचरण में परंपरागत वफादारी घोट–घोट कर समाई हुई है। विडंबना तो यह है कि लोग अपने सगे सम्बन्धियों को आगे बढ़ाने में अधिक रुचि भी दिखलाते हैं।''

लोकतन्त्र की चुनौतियांकृ

आज का राजनीति लोकतन्त्र सौदेबाजी, खरीद–फरोख्त, हलाली तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति का लोकतन्त्र है जहां हर तरह के सांसद तथा विधायक अपने आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार मोलभाव करते हैं। दारूलशफा उपन्यास में उत्सुकदास को मुख्यमंत्री बनने से रोकना है, इन्हीं दोनों स्थितियों का फायदा लोवीराम उठाना चाहते तथा उसके माध्यम से अपना तिजोरी भरना चाहते हैंकृ ''उत्सुक दास को सरकार बनानी थी रंगीनराय को सरकार गिराने लोवीराम इनके बीच की दूरी बांधकर कुछ बटोरना चाहते थे। पार्टी, प्रदेश, देश, विश्व–ब्राह्माण्ड में कहीं कोई भी ऐसा धरातल नहीं था जो उनकी तराजू में तौला नहीं जा सके असल में एक तिजोरी ही थी जो उन्हें प्रेरणा देती किधर जाए, क्या करें?

राजकृष्ण मिश्र दारूलशफा उपन्यास में रमगीनराय के माध्यम से मसाज में व्याप्त काला बाजारी, रिश्वतखोरी, भुखमरी का कृत्रिम माहौल नेताओं द्वारा अपने स्वार्थों के लिए बनना तथा दाम बढ़ाने का खेल गेहूँ को सड़ाकर शराब बनाना आदि का विरोध रंगीन राय करते तथा इसके लिए उत्सुक दास तथा कृष्णवल्लभ को राजनीति से समाप्त करना चाहते हैं। ''मिलों का उत्पादन कम करके उत्पादन क्षमता घटाकर बाजार में कृत्रिम कमी पैदा की जाती है। दाम बढ़ते, मांग पूर्ति का संतुलन बिगड़ने पर काला बाजार में धीरे–धीरे माल निकाला जाता। लेकिन सभी साले चोर है। लोबीराम, कृष्णबल्लभ, उत्सुकदास सभी को गिराना था। सबसे शक्तिशाली होने के कारण पहला शिकार उत्सुक दास को बनाना होगा।

आज की राजनीति में ईमानदारी, निःस्वार्थ भाव से देश सेवा तथा राष्ट्रहित की कल्पना जो आजादी तथा स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान किया गया था वह तो लुप्त प्रायः हो गया है तथा यदि बचा है, तो चारों तरफ भ्रष्टाचार, कुर्सी का संघर्ष कुर्सी के लिए भाई–भाई पिता–पुत्र, मित्र–दोस्त सभी सम्बन्धों को लड़ा दिया गया एक आजादी के दौर की पीढ़ी जो आजादी की लड़ाई के लिए अपने स्वार्थों से समझौता करके अपनी कुर्बानी तथा बलिदान देने में कोई परहेज नहीं किया तो एक आज का समाज है जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किसी हद तक जाने को तैयार बैठा है, ''शासनतंत्र से बड़ा गुरू कौन होगा? कुर्सी सब कुछ सिखा देती है। फिर शासनतन्त्र हाथ से निकलने, कुर्सी नीचे खिसक जाने के डर से कोई भी उस धरातल पर नहीं जाना चाहता जहां बलिदानों की समाधि थी।'' इस प्रकार सत्ता का सुख एक बार भोग लेने के पश्चात् सत्ता के माध्यम से जो भोगविलास तथा शासन तन्त्र का लूट खसोट, सत्ता के आराम फहम हुक्मदारों की आदत हो जाने को फिर उससे दूर होने की किसी तरह कि कल्पना नहीं करते हैं।

''हमारे देश में लोकतन्त्र अपने बचपन में ही इतना रूग्ण हो गया है। देश का लोकतन्त्र एक वैसे दर्दनाक मोड़ पर पहुंच चुका है, जिस मोड़ पर रूस और पूर्वी यूरोपीय देशों में कुछ सालों पहले समाजवाद पहुंचा था, हालांकि उसे बचाने की जनता की अंतशक्ति अभी खत्म नहीं हुई हैं, बड़े पैमाने पर भी और आपराधिक हस्तक्षेप अभी खत्म नहीं हुई हैं, बड़े पैमाने पर भी और आपराधिक हस्तक्षेपों के बावजूद फिर भी भारत में लोकतंत्र संकट में है। पिछले कुल सालों में जिस तेजी से राजनीतिक भ्रष्टाचार और अवसरवाद बढ़े हैं, घोटालों पर लीपापोती हुई है। विधायकों, सांसदों मन्त्रियों ने अपने आराम, दिखावे और ऐय्याशी के अमेरिकी प्रतिमान तोड़े हैं। संसदीय समितियां पर्यटन समितियां में बदली है चिकित्सा, शिक्षा, अदालत, यातायात, डाक आदि सरकारी सेवाओं के स्तर में गिरावट आयी है किसानों का दर्द बढ़ा है उसी गति से लोकतन्त्र एक प्रहसन में बदला है।''

हमारे देश में लोकतन्त्र तथा राजनीति का मूल आधार जातिवाद, परिवारवाद, पूंजीवाद भ्रष्टाचार आदि सभी आज राजनीति के चरम पर है आज किसी भी दल द्वारा कोई भी व्यक्ति को चुनाव लड़ाने से पहले उसकी जाति का पहले उल्लेख किया जाता है। इसके अलावा परिवारवाद के रूप में मुख्यमंत्री के बेटा मुख्यमंत्री, सांसद को बेटा सांसद आदि चाहे वह योग्य हो या अयोग्य भारत की राजनीति में यह एक अनिवार्य विसंगतियां हैं।

भारत की राजनीति में अपराधियों का बोलबाला है कोई भी अपराधी को जब तक अंतिम रूप से सजा नहीं हो जाती तब तक चुनाव लड़ने से कोई रोक नहीं है। दारूलसभा उपन्यास के प्रमुख पात्र उत्सुकदास का राजनैतिक सहयोग कृष्ण बल्लभ यादव राजनीतिक अपराधियों में से एक है और उसके प्रमुख सहयोगी दुर्लभ काछी एक डकैत है जो उसके हर आपराधिक कृत्य में योगदान देता है। इस प्रकार दारूलशफा उपन्यास का प्रारम्भ ही मुख्यमंत्री कुर्सी प्राप्त करने के लिए उत्सुकदास द्वारा होता है तथा कृष्ण वल्लभ यादव की मन्त्री बनने की लालसा से होती है। जिससे वह अपने द्वारा आपराधिक तथा भ्रष्टाचार कृत्यों को छिपा सके, वे तांबा कांड, अफीम सप्लाई आदि अपराधों को छिपाने के लिए कुर्सी प्राप्त करने का अन्तः तक प्रयत्न करते हैं जिससे अपने कृत्यों को छिपा सके और कुर्सी प्राप्त करने की लालसा चलती रहती है। इस प्रकार भारतीय राजनैतिक समाज में व्याप्त राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक सभी प्रकार के भ्रष्टाचार की विसंगति दारूलशफा उपन्यास में स्पष्ट दिखायी देती है।

आज के राजनीति में विधायकों के खरीद–फरोख्त, उद्योग तथा सरकारी सम्पत्तियों का अनुपयोग सरकारी पद का दुरुपयोग इत्यादि जो कि उत्सुकदास के माध्यम से किया गया है। आज की राजनैतिक विसंगतियों की स्पष्ट छाप दिखायी देती है।

संदर्भ

1. दारूलशफा, पृ. 54, 55, 60, 155
2. सच्चिदानंद सिन्हा, लोकतंत्र की चुनौती, वाणी प्रकाशन, पृ. 144
3. भारत का राजनीति संकट, राजकिशोर, पृ. 126